(Sri Neelkanth Aghorastra Stotram)
श्री नीलकंठ अघोरास्त्र

भगवान नीलकंठ के इस अघोरास्त्र का प्रयोग सर्वत्र सफलताओं और अन्त में उनके लोक में निवास करने के लिए किया जाता है। इस अस्त्र का प्रयोग पापों के क्षय, लक्ष्मी की स्थिरता, आरोग्य, ज्वर निवारण, अपमृत्यु से मुक्ति, क्षय रोग, कुष्ठ रोग, भूत-प्रेतादि,से मुक्ति के लिए भी किया जाता है। प्रचण्ड से प्रचण्ड दुरात्मा का प्रभाव इसके पाठ से देखते ही देखते समाप्त हो जाता है।

इस नीलकण्ठ अघोरास्त्र का प्रतिदिन सात बार पाठ करने से यह शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है। प्रेतात्मा से ग्रसित किसी भी व्यक्ति को ७ बार मोर के पंख से झाड़ने मात्र से प्रभावित व्यक्ति ठीक हो जाता है।

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

विनियोगः- ॐ अस्य श्री भगवान नीलकण्ठ सदा-शिव-स्तोत्र मंत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री नीलकण्ठ सदाशिवो देवता, ब्रह्म बीजं, पार्वती शक्तिः, मम समस्त पाप क्षयार्थं क्षेम-स्थै-र्आयु-आरोग्य-अभिवृद्धयर्थं मोक्षादि-चतुर्वर्ग-साधनार्थं च श्री नीलकण्ठ-सदाशिव-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः - श्री ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे ।
श्री नीलकण्ठ सदाशिव देवतायै नमः हृदि।
ब्रह्म बीजाय नमः लिंगे।
पार्वती शक्त्यै नमः नाभौ।
मम समस्त पाप क्षयार्थं क्षेम-स्थै-र्आयु-आरोग्य-अभिवृद्धयर्थं मोक्षादि-चतुर्वर्ग-साधनार्थं च श्री नीलकण्ठ-सदाशिव-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

स्तोत्र

ॐ नमो नीलकण्ठाय, श्वेत-शरीराय, सर्पालंकार भूषिताय, भुजंग परिकराय, नागयज्ञोपवीताय, अनेक मृत्यु विनाशाय नमः। युग युगान्त काल प्रलय-प्रचंडाय, प्रज्वाल-मुखाय नमः। दंष्ट्राकराल घोर रूपाय हूं हूं फट् स्वाहा। ज्वालामुखाय, मंत्र करालाय, प्रचण्डार्क सहस्त्रांशु चण्डाय नमः। कर्पूर मोद परिमलांगाय नमः। ॐ ईं ईं नील महानील वज्र वैलक्ष्य मणि माणिक्य मुकुट भूषणाय हन हन हन दहन दहनाय ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बंध बंध घातय घातय हुं फट् ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं स्फुर अघोर रूपाय रथ रथ तंत्र तंत्र चट् चट् कह कह मद मद दहन दाहनाय ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बंध बंध घातय घातय हुं फट् जरा मरण भय हूं हूं फट् स्वाहा।

अनन्ताघोर ज्वर मरण भय क्षय कुष्ठ व्याधि विनाशाय, शाकिनी डाकिनी ब्रह्मराक्षस दैत्य दानव बन्धनाय, अपस्मार भूत बैताल डाकिनी शाकिनी सर्व ग्रह विनाशाय, मंत्र कोटि प्रकटाय पर विद्योच्छेदनाय, हूं हूं फट् स्वाहा। आत्म मंत्र सरंक्षणाय नमः ।

ॐ ह्रां ह्रीं हौं नमो भूत डामरी ज्वाल वश भूतानां द्वादश भूतानां त्रयोदश षोडश प्रेतानां पंच दश डाकिनी शाकिनीनां हन हन। दहन दारनाथ! एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पंचाहिक व्याघ्र पादान्त वातादि वात सरिक कफ पित्तक काश श्वास श्लेष्मादिकं दह दह छिन्धि छिन्धि श्रीमहादेव निर्मित स्तंभन मोहन वश्याकर्षणोच्चाटन कीलना द्वेषण इति षट् कर्माणि वृत्य हूं हूं फट् स्वाहा।

वात-ज्वर मरण-भय छिन्न छिन्न नेह नेह भूतज्वर प्रेतज्वर पिशाचज्वर रात्रिज्वर शीतज्वर तापज्वर बालज्वर कुमारज्वर अमितज्वर दहनज्वर ब्रह्मज्वर विष्णुज्वर रूद्रज्वर मारीज्वर प्रवेशज्वर कामादि विषमज्वर मारी ज्वर प्रचण्ड घराय

DR.RUPNATH(DR.RUPAK NATH)

प्रमथेश्वर ! शीघ्रं हूं हूं फट् स्वाहा। ॐ नमो नीलकण्ठाय, दक्षज्वर ध्वंसनाय श्री नीलकण्ठाय नमः।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)